

(६१) महाभारत-संग्रह ॥

श्री कौशिक

ASIAN ARCHIVES

1.073

श्री कौशिक

१ सप्तु रिन्नार्थ सर्वार्थज्ञान सकला ध्वनरुलया फि पूर्वकन
उ लाक गमन कामनार्थ

१ गायल नार्थ १ गसरुमदा नऊन्यरुलया फि १५
१ दामादन नार्थ ॥ यमुजन्मा जिग यायक्यार्क १ गमधऊऊऊन

१ सर्वान्ध विनार्थ ॥ सर्वान्ध विमूकिकाम

१ ह्युयान नार्थ ॥ नृनिष्काम यागरुल

१ गलग नार्थ ॥ गनययसर्व सिद्धिरुल

१ नूनन नार्थ ॥ सर्वय रयनि वानमानन्यरुल

१ चक्र नार्थ ॥ विष्णुलाकयाफि

१ यमादाख्य ॥ रुविधानलनाद भगुनरुलाभ्यधयागऊन्यरुल

१ कायनिर्मल ॥ यायकं चक्र विमूकिकदभ १ गदानऊन्यरुल

१ गक्र नार्थ ॥ मनाहिलषितरुला लनरू नु काम

१ चन्द्र नार्थ ॥ चन्द्रलाका धिकवमक वासकाम

१ र्यचनदनार्थ ॥ र्यचऊमा जिग यायक्य पूर्वकदभ खमधयागऊन्यरु
ल काम

१ कालमावतनार्थ ॥ कालविमूक्तिरूद्रलाकयापिकाम
 २ मृत्पूजयनार्थ ॥ सयकृत्तन्मूर्तिनयायकयावच्छिन्नमृत्पूविबजिन
 ३ सहोदयनार्थ ॥ सोदनादिवधकन्यकूषत्रागयममन
 ४ ॥ यथागनार्थ ॥ सयकृत्तन्मूर्तिनयनकर्ययमहायागकादिज्ञानाज्ञानकृतद
 विमूक्त्यालुनमनास्वमयसरुमुवाक्ययथागकन्यस्वर्गुरुलाभनाहवयूष
 ५ ॥ र्भस्वमूल ॥ रूद्रधारातीर्थ ॥ सहस्रकृत्तावच्छिन्नयागकयममन
 ६ ॥ नमनावततीर्थ ॥ यावर्कर्मकृतकलाषविमूक्तिर्नमनावततीयापि
 ७ ॥ विमनावततीर्थ ॥ नृगिष्ममयागकन्यरुलागिलाकयापि
 ८ ॥ निर्मलावततीर्थ ॥ नगरुत्याविमूक्तिर्भगवत्पदानदमणुलाकन्यपूनाकाम
 ९ ॥ वायूवततीर्थ ॥ वायूगुल्यवलविजिष्ठदमकल्याकूनिमसरुत
 १० ॥ यागकूलतीर्थ ॥ यागसिद्धियागगमालाकगमन
 ११ ॥ मलितीर्थ ॥ दमभक्षदानकन्यरुलाखंडललाकानवनदान
 १२ ॥ उलूगया ॥ दमभक्षयागसानसमरुतकाटिसंवत्सरावच्छिन्नवर्गवास
 १३ ॥ योविकातीर्थ ॥ दमभक्षदानकन्यपूनासमन्वितदवीलाक

स
१ विविक्तमतीर्थ ॥ सहस्रं नान्यरुल विष्णुनाकगमन
२ सहस्रतीर्थ ॥ स्वर्गुत्ताद (महयत्न) नूतलोक ॥ स्वर्गुदान
३ स्वर्गतीर्थ ॥ सर्वजगत्तुल नूतलोकगमन ॥

४ कथिततीर्थ ॥ नाजसूय यागजन्य रुलाव किन्नरकलाक
५ नाजनाजसूयतीर्थ ॥ सयज्जमाजिनयायकयार्ह दवीलाक
६ उमायनितीर्थ ॥ सामयाजीसमरुल नूतलोक

७ यायमायनतीर्थ ॥

८ कथयालतीर्थ ॥

९ विष्णुतीर्थ ॥ यायकयार्ह विष्णुलाक

१० जयमंगलतीर्थ ॥ वेप्रियनाजय सर्वयायकय

११ नृकाभरेवतीर्थ ॥ वक्ररुत्या विमूर्कि नूतयूनगमन

१२ श्रीवत्सलतीर्थ ॥ द (म) दियक नयायकयदूर्जालाक

१३ यमलनतीर्थ ॥

१४ यमगतीर्थ ॥ संगम

१५ काषादकतीर्थ ॥ जन्माजिनयायकय नूतलोक

१ सोराग्यनीर्थ ॥ दूरुगम सोराग्य कामयन गमिया कि

१ कुवनीर्थ ॥ कुवन उल्य धनया फून काल नूद यन

१ गोनीनीर्थ ॥ ना नी (मष्टय नियगा विन सुख राग मग दूर्ग लो क

१ मृ (मष्टय द क नीर्थ ॥ यमु ऊन विमू कि गिव लाक निवास

१ खर्व निक्का नीर्थ ॥ नन द ह डि ग दू विन विमू कि गिव य नी गमन

१ न्नाय नीर्थ ॥ च गु न नी निल द ऊ न्ना या डि ग व द्म ह ह्या दि म ह या न वि

विमू कि गी गिव ता का धि क न ल क वा सा ह ना व लि काम ॥ रु ल दान

१ ना ना य ल म ह नीर्थ ॥ म ह या न क विमू कि वि षू सा य ऊ कामा

१ गिव नी संम ग नीर्थ ॥

१ पा व लि का नीर्थ ॥ (ग स रु स दान ऊ न्य रु ला व कि न नू ला क

१ न्मा द न नीर्थ ॥

१ नू ग ल्य नीर्थ ॥ स लू ल वा न्न ल या फि यूर्व का ल म ग नि

१ नी न क नीर्थ ॥ नी न क रु द स मी य दू न सान दाना दि रु ल यूर्व क गिव ला क

१ वा स की नीर्थ ॥ ना ग र य विमू कि वि षू ला क ॥ घ ट दान

१८॥ अथ नाना रसस्य लक्षणम् ॥ १८॥ अथ नाना रसस्य लक्षणम् ॥ १८॥

हृद्यनननीर्थ॥ नृधमधरुला वाकि नूडलाक

१दवघटनीर्थ॥सकलदवाञ्जनयुग्मावापिस्वर्णयापि

॥ वक्रसहस्रगार्था ॥ सर्वमथ रुत्ता वापि वक्रलोकयापि

१ विष्णु सहस्रनामार्थ ॥ भूदानसमस्त लयादि विष्णुयुगावाप्त

(नूदसहप्रतीयाकाटि (मदानकन्यावाकि नूदयूनी

॥सूर्यशोभनीर्थ॥पूर्वजन्मान्नप्रीत्यायद्वयनिः०यायस्व॥दीयदानार्थ

चन्द्रशङ्खनाथः॥ सर्वनाथविमूर्तिः दशास्त्रमन्त्रसमयश्च चन्द्रसाकम्भनः

रमनकामनातीर्थामेनाहिलषितरुलानंकनमिषलाक

६३॥ इति कालान्वयः ॥ मिथ्या भयं संहयाय विमुक्तिं स्वर्गं कामं

११ गमस्व न गीर्थ ॥

१॥ ज्ञानार्थ ॥

१॥ अनन्यार्थ ॥ पूर्वजन्माजिनयाय विमुक्ति काम ॥ वसुदान

१ वालम्भभननार्थ॥ वालदाषा द्विमूकि

१ रत्रवनीर्थ॥ भनकनयदयाफि

१ ऊलम्भननार्थ॥ निःयायपूर्वक निववम्भ

१ शुक्रम्भनीर्थ॥ सर्वमधरुलावाफि रुनालयगमन

१ विनायकनीर्थ॥ निर्विघ्नाहिसखिन कार्यसिद्धि काम

१ यमुगलनीर्थ॥ यमुयाभ विमूकि विविष्टयावाफि

१ (शुष्मानकनीर्थ॥ वदूयायय विल्यागसूनसद्म काम

१ नाम्रचूतनीर्थ॥ षष्टि संवत्सनाहूनयायदय काम

१ उरुप्रवादिनीनीर्थ॥ भन(भन दानऊनययूष्मावाफि नूडलाक

१ वेसर्गभनीर्थ॥ सरुप्रऊनायनयाययभमनसरुप्रमखाहूनयूष्मावाफि

१ रुखामोचननीर्थ॥ वक्ररुखादियायदय (भटि (भन दानसमरुल नूडलाक

१ केलाभनीर्थ॥ सर्वयरु रुलावाफिसनवः रुलाविनकेलाभगमन

१ हिमालनीर्थ॥ सर्वनयः रुलावाफि स्वर्नकाम

१ विष्णुयादूकानार्थ ॥ विष्णु कलाद्वय काम

१ रुद्रयननार्थ ॥ रुद्रलाकावा कि

१ चंद्रार्थ ॥ चन्द्रकानि मुख स्व काम

१ सूर्यार्थ ॥ सूर्य ऊर्मा जिह्व क लूख विमू कि

१ अमर्त्यार्थ ॥ अमर्त्यावस्ति न

१ उलूखगयार्थ ॥ यिह कलम गवन्मुख सून गन कलाद्वय काम

१ गदाधनार्थ ॥ उलूखगयाव न

१ गयार्थ ॥

१ यिनामरुगार्थ ॥ कलकाटि समुद्र नव कलाका दिवा कि

१ चन्द्रलामार्थ ॥ चन्द्रलाक वास

१ नावदार्थ ॥ मिथ्या राखन या य विमू कि स्वर्ण काम

१ सफरिगार्थ ॥ सफ ऊर्मा जिह्व विन कय मिव लाक ॥ वाक्म गयूरा

१ कथानगिगार्थ ॥ निः कि रि वमाह ग्वन यून या कि

१ धा या उ म म् १६
 ०० म्
 मनेव
 नु न ता
 नि प ह ल
 वृ स्था
 च व कं
 ग्म य प ल हा
 हा दा
 क य ह ल
 य हा
 प क्ता या, पी

१०५

ASIAN ARCHIVES

1.013

संस्कृत-सूत्र-संग्रहः

ASIAN ARCHIVES

संस्कृत-सूत्र-संग्रहः

२ धा या उ म म् १६
०० म्
मनेव
मुनता
निपहल
वृष्ण
चवक
ग्वमयपलहा
हादा
कयहल
वाहा
पकाया. १०

नमकस

नमकस

२०००

१०००

१ कान्तिरेवतीर्थ ॥ दहात्यन के लिष द्य रुनात्रय

१ गदानीर्थ ॥

१ काकनीर्थ ॥

१ उरुव (म कर्तु) नीर्थ ॥

१ खनवात्रा रुनीर्थ ॥

१ महाकालनीर्थ ॥

१ म्हासमतीनीर्थ ॥

१ वाग्मनीयनननीर्थ ॥ काटि (मदान ऊन्य रुल नूड लाक

१ सुन्दरीनीर्थ ॥ गिव लाक याफि

१ सरुम सुन्दरीनीर्थ ॥ काटि म स्वाहव य म्हा वाफि गिव लाक

१ नृग म्हा नीर्थ ॥

१ विमलाम्बुनीर्थ ॥ काटि ऊमा किंग याय द्यया रुन सर्व दान ऊन्य

रुला वाफि खलु विमाना धि कन व क नूड लाक याफि कामनीर्थ

१ योगमम्बुनीर्थ ॥

१ क्लृप्तानाम्

१ सिद्धाम्

१ श्रमलाम्

१ कामधनम्

१ नूननूननीर्थः॥

१ नूयानागलनीर्थः॥ वूनूयायाना वदनगुल्यावाफिउमालाक

१ वूमालनीर्थ

१ नननूनदधननीर्थ

१ वूमनीर्थ

१ वूमसुनधनीनीर्थः॥ ननाध्वम धवाऊययनकयिला ननकाटिख

लुगुलासदुमसर्वयल्लुवसर्वनीर्थवगधिल्लसर्वदवावैनऊन्य

रुलावाफि २ रुलाकसुखलोगनि ऊकूलान्वितारुवस्वर्लुयाना विना

रुनयनमगनि प्राफि कामनार्थ

१ वाध्वमहानीर्थः॥











